पाठ–6
रहीम

कवि परिचय

जन्म – 1556

मृत्यु– 1626

रहीम का पुरा नाम अब्दुल रहीम खानखाना था। इनके पिता का नाम बैरम खान तथा माता का नाम सुल्ताना बेगम था। बैरम खान मुगल बादशाह अकबर के संरक्षक थे। रहीम को वीरता, राजनीति, राज्य–संचालन, दानशीलता तथा काव्य रचना जैसे अद्‌भुत गुण अपने माता–पिता से विरासत में मिले थे। बचपन से ही रहीम साहित्य प्रेमी और बुद्धिमान थे। सन् 1562 में बैरम खान की मृत्यु के बाद अकबर ने रहीम की बुद्धिमता को परखते हुए उनकी शिक्षा–दीक्षा का पूर्ण प्रबंध अपने जिम्मे ले लिया। अकबर, रहीम से इतना प्रभावित हुए कि शहजादों को प्रदान की जाने वाली उपाधि 'मिर्जा खान' से रहीम को सम्बोधित करने लगे।

रहीम का व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था। वे मुसलमान होकर भी कृष्ण भक्त थे। रहीम ने अपने काव्य में रामायण, महाभारत, पुराण तथा गीता जैसे ग्रंथों के कथानकों को लिया है। इन्होंने स्वयं को 'रहिमन' कहकर भी सम्बोधित किया है। इनके काव्य में नीति, भक्ति, प्रेम और श्रृंगार का सुन्दर समावेश मिलता है। रहीम ने अपने अनुभवों को सरल शैली में अभिव्यक्त किया है।

कृतियाँ

रहीम के ग्रन्थों में रहीम दोहावली या सतसई, बरवै, मदनाष्टक, रास पंचाध्यायी, नगर शोभा ,खेट कौतुक जातकम्, नायिका भेद, श्रृंगार सोरठा, फुटकर कवित्त, सवैये, संस्कृत काव्य प्रसिद्ध हैं।

पाठ परिचय

संकलित काव्यांश में रहीम के बरवै एवं दोहों के माध्यम से भक्ति एवं नीति की भावना अभिव्यक्त की गई है। इसमे ईश्वर के रूप में प्राकृतिक शक्तियों की महत्ता तथा मनुष्य जीवन की उपयोगिता को रेखांकित किया गया है। रहीम ने परोपकार, आत्मसमर्पण एवं गरीब–असहाय जन के प्रति के अनुराग रखने का संदेश देते हुए, मानव जीवन की सार्थकता के लिए सदमार्ग पर चलने का संदेश दिया है।

बरवै

बन्दौ बिघन–बिनासन, ऋधि–सिधि–ईस।
निर्मल बुद्धि–प्रकासन, सिसु ससि सीस।। 1।।
भजहु चराचर–नायक, सूरज देव।
दीन जनन सुखदायक, तारन एव।। 2।।

ध्यावौं विपद–विदारन सुअन–समीर।
खल दानव वनजारन प्रिय रघुबीर ।।3।।
उधो भलो न कहनौ, कछु पर पूठि।
सांचे ते भे झूठे, साँची झूठि।।4।।
ज्यों चौरासी लख में, मानुष देह।
त्यों ही दुर्लभ जग में, सहज सनेह।।5।।

दोहे

कौन बड़ाई जलधि मिलि, गंग नाम भो धीम।
केहि की प्रभुता नहिं घटी पर, घर गए रहीम।।1।।
जे गरीब पर हित करैं, ते रहीम बड़ लोग।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग।।2।।
अब रहीम मुश्किल पड़ी, गाढ़े दोउ काम।
साँचे से तो जग नहिं, झूठे मिलैं न राम।।3।।
देनहार कोउ और है, भेजत सो दिन रैन।
लोग भरम हम पै धरैं, याते नीचे नैन।।4।।
तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहिम परकाज हित, संपति सँचहि सुजान।।5।।

शब्दार्थ

बन्दौ–वंदना करना	विपद–विदारन– दुःख दूर करने वाला
पूठि–पीठ पीछे	धीम–धारण करना
केहि –किसकी	बापुरो–बेचारा
मिताई–मित्रता	जोग–योग्य
देनहार–देने वाला	याते–इससे इस कारण

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1 रहीम को अकबर ने कौनसी उपाधि प्रदान की थी ?

(क) मीर (ख) सूबेदार

(ग) मिर्ज़ा खान (घ) रहीम खान

2 मुसलमान होकर भी रहीम किसकी भक्ति करते थे ?

(क) अल्लाह की (ख) ईसामसीह की

(ग) राम की (घ) कृष्ण की

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. रहीम ने 'विघ्न विनासन' किसे कहा है?

4. मनुष्य जन्म कब मिलता है?

5. रहीम ने बड़ा व्यक्ति किसे माना है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. रहीम ने काव्य में किन किन भाषाओं का प्रयोग किया है ?

7. पेड़ और तालाब के माध्यम से रहीम क्या सीख देते हैं ?

8. 'उधो भलो न कहनौ, कछु पर पूठि' बरवै से रहीम का आशय क्या है ?

9. रहीम ने सूरज को चराचर नायक क्यों कहा है ?

निबन्धात्मक प्रश्न–

10. 'ज्यों चौरासी लख में, मानुष देह' रहीम की इस पंक्ति का आशय क्या है?

11. 'कृष्ण मिताई जोग' के आधार पर सुदामा–कृष्ण की मित्रता को विस्तार से समझाइए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तर माला

(1) ग

(2) घ